International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

lLdr lkfgR; e xhfrdk0; dk
विकासक्रम एवं विशय–वैचित्य

Mk0 lfork 'kek
,e0 ,0] ih0,p0Mh0
$2 lLdr f'kf{kdk
Ek-j-n-ck-m-fo- lhrke<h

'' सत्कविरसनाशूर्पीनिस्तुषरशब्द शालिपाकेन ।
RklrkSi nf;rk/kjefi ukfn;r dk l/kk nklhAA**

xhfrdk0; lLdr Hkkjrh dk je.kh; vM-d gA xhfrdk0; dk0; dk og Lo:Ik g] ftle dk0;e;rk d lkFk lxhrkRedrk ie[k gkrh gA bud i|k dk ok|k d lkFk x;k tk ldrk gA tc dfo dk gn; l[k&n%[k dh rho vuHko l vkIykfor gkdj viuh jkxkfRerk vuHkfr dk viuh gkfnd Hkkouk dh i.krk l y;&i/kku Nnk Hk; i|k d }kjk 0;Dr djrk g fd dfooj dk Hkko] xhfr&dk0; d :Ik e ifjf.kr gkrk gA xhfr dh vkRek Hkkokfrjd gA xhfr&dk0; Hkko i/kku gkr gA शास्त्रीय दृष्टि से गीतिकाव्य के खण्ड– काव्य कहा जाता है क्योंfd bue egkdk0; d lEi.k x.k ;k y{.k ugh gkr gA
– '' खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैक देशानुसारि च। ''

गीतिकाव्य को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों में परिभाषित किया gA

पाश्चात्य आलोचक अर्नेस्ट राइस अनुसार– ''वास्तविक गीत वही है, जो भाव का भावात्मक विचारों का भाषा में स्वाभाविक विस्फोट है।'' महादेवी वर्मा के शब्दों में – '' सुख– दुःख की भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने शब्दों में स्वरसाधना के उपयुक्त fp=.k dj nuk gh xhr gA**

पं० चन्द्रशेखर पाण्डेय के 'kCnk e& ^ ekuo thou vUrjkRek d fdlh ,d iVy dk fp=.k xhfr&dk0; dk ie[k ifrik| gkrk gA tgk egkdk0; e ekuo thou dh समग्रता का प्रसार है, वहाँ गीति–काव्य में जीवन की एकदेशीयता की तन्मयता है।

xhfr dk0;k dk vkdkj&प्रकार महाकाव्यों से छोटा है। प्रधानतया उनमें एक ही विषय of.kr gkrk g& Jxkfjd] /kkfed vFkok ufrdA xhfrdk0; e ykfyR; ,o ek/k; dk विशेष पुट रहता हैं।''

सामान्यतया विषय के आधार पर तीन प्रकार के गीति–काव्य होते g&

1- Jxkfjd & Jxkjh xhfr&dk0;
2- /kkfed & L=kr&dk0;

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3- ufrd & uhfr& dk0;
xhfr dk0; d nk idkj g%&
1- icU/kd 2- eDrd
i0 cyno mik/;k; u lLdr xhfr&dk0; d nk Hkn fd, g] tk lotu ekU; g] o Hkn fuEu gA&
1- ykfdd 2- /kkfed

लौकिक मुक्तक लोक के नाना विषयों के विधान से सम्बन्ध रखता gA /kkfed eDrdk dk L=kr dgr gA

उद्भव– संस्कृत के ऋग्वेद के उषा सूक्त में, सर्वप्रथम गीति–काव्य dh >yd feyrh gA bld vuUrj ckYehfd jke;.k ,o egkHkkjr d vud LFkyk e xhfr&dk0;kR;drk fमिलती है। बाल्मीकि का श्लोकात्मक शोकोद्गार भी गीति–काव्य कहा जा सकता है। सुभाषित ग्रन्धो में पाणिनि के नाम से भी कुछ xhfr&i| miyC/k gA vr% xhfr;k dk mnxe LFkku on gh gA

ykfdd xhfr&dk0;&
dkfynkl& dfodyx: egkdfo dkfynkl dfr _rlgkj**

^^e/knre ykfdd xhfrdk0; dk vfne xUFk gA dkfynkl dr** _rlgkj Hkh गीति–काव्य ही हैं कि रचना मानते थे पर अब अधिकांश विद्वानों ने इसे कालिदास का तरूण प्रयास मान लिया है। इसके बारे में प्रसिद्ध है– ''रचना–कौशल में प्रौढ़ता न gku ij Hkh _rlgkj dk foशिष्ट स्थान है क्योंकि संस्कृत में ऋतुवर्णन पर एकमात्र ogh lkxkikx xUFk miyC/k gA^^ ;g jpuk Ng lxk dk ,d NkVk&lk dk0; gA इसका प्रतिपाद्य विषय 'प्रकृति–चित्रण है। इसमें ग्रीष्म वर्षा शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतुओं का क्रमशः वर्णन किया गया है। कवि काव्यारम्भ ग्रीष्म की प्रचण्डता से djrk g rFkk mldh ifjlekfIr olUr dh ljlrk vkj ekndrk l gkrh gA ;g कवि की प्रारम्भिक रचना है, अतः इसमें काव्य– कौशल देखना कवि के साथ अन्याय होगा, किन्तु कवि का सूक्ष्म–दर्शन प्रसाद गुण इसमें प्राप्य है। मैक्डोनल ने भी लिखा g& ^^

प्रकृति के प्रति कवि की गहरी सहानभूति विशद् रंगों में चित्रित करने की कुशलता को ftru lUnj :lk e ;g xUFk lfpr djrk g] mru e dnkfpr dkb Hkh nljk xUFk ugh djrkA **vr% _r&lgkj Jxkj dk0; dh iFke J.kh gA mnkgj.kkFk&

''द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रीयः सकामाः पवनः सुगन्धिः
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः सर्वप्रिये चारूतंर वसन्ते।।

मेधदूतम्– इसमें सन्देह नहीं कि ऋतुसंहार से कही अधिक यशस्वी और प्रौढ dfr कालिदास कृत मेधदूतम् है। जिसमें 121 पद्यों में कवि ने यक्ष की विरहजन्य मनोदशा का मार्मिक वित्रण किया है। इस लधु कथानक के कलेवर में कवि ने देश की मनोहर

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

:lk dh ek/kjh dk foiyEHk Jxkj d d:.k dkey Hkko dk ukjh lkUn; d ety :lk dk vkj gn; d mnkUr vuHkfr;k dk ekfed fp=.k fd;k gA e/knr d समस्त पध बड़े श्रुति–मधुर, रस–पेशल और गेयता और रमणीयता से परिपूर्ण है– mnkgj.kkFk&

^^ rk tkuhFkk% ifjferdFkk thfor e f}rh;A
njhHkr ef; lgpj pØokdhfHkodkeAA**
blh rjg&^^ iPNUrh ;k e/kjopuk lkfjdk i´tjLFkkA
dfPpnHkr% Lejfl jfld Ro% fg rL; fi;fr AA**

इस प्रकार स्पष्ट है कि मेधदूतम् की भाषा अत्यंत प्रांजल, परिमार्जित और प्रवाहपूर्ण है और परिमित पदावली में भाव की विशद् व्यजंना कर देना उसका विशेष गुण है तथा vydkjh dk ;FkkLFkku mi;DRk ulfxd pk:rk dk lpkj dj nrk gA

स्मरणीय है कि संदेश काव्य की अभिनव और मौलिक कल्पना का श्रेय कालिदास को ही दिया जाता है तथा संस्कृत में दूत काव्यों का श्रीगणेश मेधदूत से होता है। डॉ0 भोलाशंकर व्यास का स्पष्टतया मत यही ह fd & ^^ e?knr न खण्डकाव्य है न करूण गीति ही, यह विषयोप्रधान भावनात्मक गीतिकाव्य है।''

डॉ0 कीथ ने इसे शोक काव्य "Elegy" मानते है। प्रो0 चन्द्रशेखर ikM; u dgk g fd& ^^teu dfo feyj u viu efj;k LVvV uked ukV;dk0; e कालिदास के अनुसरण पर मेध द्वारा संदेश–भेजने की कल्पना की है। प्रो0 भैक्सभूलर ने 'मेघदूत' का जर्मन पद्य तथा श्टुट्ज ने जर्मन गद्य में अनुवाद किया हैं। डॉ0 एच बेक्क ने 'मेघदूत' को तिब्बती भाषा में एक संस्करण में प्रकाशित किया है। अमेरिका के vkFkj jkbMj egkn; u e?knr dk vxth e i/kkuokn fd;k g**

स्पष्ट है कि मेघदूत को न केवल देश में अपितु विदेशों में भी ykdfi;rk ikIr gA

Jxkj fryd & dgk tkrk g ifl) dfo dkfynkl u Jxkj&fryd dh jpuk dh] ij dN fo}ku Jxkj&fryd d jpf;rk fdlh dkfynkl dk ekur gA ;g 23 पद्दों का एक छोटा श्रृंगार प्रधान गीति–काव्य है, इसमें सरल व प्रसादर्पूण भाषा–शैली gh 0;0gr gb rFkk Jxkj d vud e?kj fp= Hkh fo|eku gA ;Fkk &&&&&
^^ bUnhoj.k u;u e[keEctu dUnu nUr/kj uoiYyouk
vxkfu pEidny% l fo/kku dkUr dFk /kfVrokuiyuAA**

vFkkr lUnj d vU; v0;;k dk fuek.k eny dkey deyk l djd mld gn; की रचना पाषाण से पदों की गयी है \

?kVdij& ijEijk&iflf) d vulkj ?kVdij

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

dkfynkl d lHkdkyhu vkj mTtf;uh d foØHkkfnR; d uojRu FkA bUgku 22 i| d ^?kVdij* uk;d xhfrdk0; dh jpuk dh A ble मेघदूत के कथानक को उलटकर विरहिणी के प्रणय–संदेश का वर्णन है। यह मार्भिक fojg&dk0; gA ble ;=d vydkj g&

^ fd dikfi ukfLr dkU;rk ik.Mx.Mifrrkydkur;kA
शोकसागरेडद्य पातितां त्वद्गुणस्मरणभेव पातिताम्

हाल की गाथा सप्तशती– हाल की गाथा

सप्तशली महाराष्ट्री प्राकृत में रची 700 गाथाओं (आर्यछन्दों) की गीति रचना है। हाल का समय प्रथम शताब्दी हैं। मुक्तक काव्य का प्राचीनतम उदाहरण 'गाथा' सप्तशती' प्राकृत होते हुए भी लौकिक गीति–काव्य पर व्यापक प्रभाव iMk gA ;g Jxkj jl&i/kku gA ble xkeh.k thou dk i.k;&fp=.k rFkk दाम्पत्य प्रेम की घटनाओं का मार्मिक ओर हृदयस्पर्शी चित्रण मिलता है। रीतिकालीन लोकप्रिय कवि बिहारलाल पर गाथा सप्तशती का बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा है। उदाहरण द्रष्टव्य है–

'' ईषत्कोषविकासं यावन्नाप्नोपि मालतीकालीका।
edjUnikuykyi e/kdj fd rkonoeHkn;flAA**

भर्तृहरि– इनके तीन शतक हैं श्रृंगार–शतक

नीतिशतक और वैराग्यशतक–ये तीनों गीतिकाव्य के गुणों से परिपूर्ण है। इनका रचनाकाल पष्ठ शतक के उत्तरार्द्ध जाता है। मर्तृहरि अनुसार स्त्री का iR;d de vkj dke ekgd gkrk g&

^fLxruHkkou p yTt;kfHk;k Hko% ijkM-e[kj/kdVk{koh{k.kA
व्योगिरीर्ष्याकलहेन लीलगा समस्त गाँव खलु बधनम् स्त्रियः।।

नैतिशतक में मनुस्मृति और महाभारत की गम्भीर नैतिकता कालिदास dh lh lfDr ijd ifrek d lkFk iLQfVr gb g&

'' साहत्यसंगीत कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छाविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवनानस्तद्भागघेयं परम् पशूनाम्।।

वैशग्यशतक में कवि ने कारूण्य और व्याकुलता के साथ संसार की निःसारता तथा वैराग्य की आवश्यकता समझाई गई है–तृष्णां न जीर्ण वयमेव जीर्णा विवके भ्रष्टानाम्–भवति विनिपातः शतमुखः मनसि चपरितुर्ष्ट कोडध dknkfjn%A**

अमरूक कवि का अमरूकशतक– अमरू अथवा

अमरूक नामक एक कवि का अमरूक–'शतक' संस्कृत lkfgR; dh ifl) dfr;k l gA ;g ,d eDrd dk0; gA bl eDRkd jpuk e भाव रस और अर्थ का जितना सन्निवेश एक–एक पद में है उतना एक पूरे प्रबंध में

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

fd;k जा सकता है– ''अमरूककवेरेकः श्लोकः प्रबंध शतायते। ''यह संस्कृत का श्रृंगार, jl&i/kku ykdfi; xhfrdk0; gA

मल्लर– इनका समय 8वी शती के लगभग है। इनका मुक्तक पद्यों का शतक है। भल्लारशतक के अनेक पद्या आंलकारिकों तथा सुभाषित संग्रहकारो ने संकलित किया gA bud पद्यों में श्रृंगार के अतिरिक्त नीति उपदेश का मार्मिक बंर्मन है।

jRukdj & gfjfot; egkdk0; d jpf;rk

रत्नाकर (नवभी शताब्दी) का '' वक्रोक्ति पञचाशिका 'नामक 50 श्लोकों का सुन्दर वक्रोक्ति काव्य मिलता हैं।

शीलामट्टारिका– कश्मीर की कवियत्री शीला नवमी शती में हुई। इनके सरस गीतिकाव्य को मम्मट राजशेखर आदि अंलकारिको ने बहुत मान दिया हैं। मम्मट ने काव्यप्रकाश में उत्तम काव्य का उदाहरण bud dk0; l fy;k gA

विल्हण– 'विक्रमांकदेवचरित' के रचयिता विल्हण 11वी शताब्दी के उत्त्तार्द्ध के कवि है। 50 ink dk y/k xhfrdk0; pkjiचाशिका '' भी इनके नाम से प्रसिद्ध है। इनका सरस o.ku dgh dgh Jxkj dk mPJ[ky :lk e Hkh gA ;/kk&

अधापितां प्रणयिनीं भुगशावकांक्षी
पीयूषर्वं कुचकुम्मद्वयं वहन्तीम्।
पश्याम्यहं यदि पुनदिवसावसाने
LoxioxujjkT; l[k R;kT;kfeAA**

tEc dfo& मेघदूत की शैली पर निबद्ध दूतकाव्यों में सबसे प्राचीन धोयी का पवनदूत gh le>k tkrk FkkA fdUr tudfo tEc dk blI Hkh ikphurj pUnnr* uked दूतकाव्य का अपूर्णरूप भी प्राप्त हुआ है। इनका समय दशवी शती का अत्तरार्द्ध है। जिनशतक का स्तुतिकाव्य भी जम्बुकवि का मिलता gA

/kk;h& dfojkt /kk;h cxky d jktk y{e.k lu 1116 b0 d vkfJrdfo FkA इन्होने मेघदूत के सहृशपवनदूत नामक पद्यो के संदेश काव्य की रचना की। इसमें ekfydrk u gkr g, Hkh fojg dk0; d eukje okD;&foU;kI] dfork dk स्वाभाविक प्रवाह तथा भावों का सौष्Bo vuie g&

^^ lkjMXk{;k tu;fr u ;n HkLe;knxxdfoA
त्वद्विश्लेषे स्मरहुतवहः श्वांसधु क्षितोडपि।
Tkku rL;k l [ky u;unkf.kokjk iHkkok
यद्वा शश्वन्नृप तव मनोवर्तिन शीतलस्य।।

Xkko/kukpkp& xko/kukpk; cxky d jkt y{e.klu 1116 d vkfJr dfo FkA

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

gkल के 'गाधा शप्तशती– के अनुकरण पर आर्यासप्तशती की रचना की जिसमें 700 आर्या छन्दो में प्रेमी–प्रमिकाओं की संयोग–वियोग की दशाओं का मंजुल एवं मार्मिक fp= vfdr fd;k x;k g

श्रृंगारोत्तरसन्प्रमेयश्यनैसचार्यगोवर्धी कोडपि न विश्रुतः।''

t;no dk xhrxkfoUn& lLdr xhfrdk0; dh ijEijk e t;no dh dk0;dfr गीतगोविन्द का विशिष्ट स्थान है और स्वय कवि ने गोबर्धनार्चाय व धोयी का समकालीन ekuk g rHkh&cxky d jktk y{e.klu dh jkT; lHkk d ie[k jRu dg tkr g xhr गोविन्द की सर्वाधिक विशेषता उसकी कोमल कान्त पदkoyh vkj yfyr vuikle; NUn है। सौन्दर्य और माधुर्य से पगी हुई ऐसी रंचना विश्व साहित्य में दुर्लभ है। उसमें अद्भुत प्रवाह है विलक्षण शब्द सौष्ठव है। श्रृंगार रस की अभिव्यंजना के लिए जैसी भाषा उसमें lk;Dr g] og ikB;ek= l lgn; Jkrk d gn; e rnu:l Hkko dk lpkj dj noh gA&

''रतिसुखसारे गतभभिसारे मदनमनोहरवेशम्।
न कुरू नितम्बिनि गमन विलम्बनमनुसार तददयेशम।।
/khj lehj ;eukrhj olfr ou ouekyhA
गोपीपीनपयोधर मदन चंचल कर युगशाली ।।

xhrxkfoUn lLdr dk vR;r ykdfi; xhr&dk0; gA ble 35 से अधिक टीकाएँ लिखी गई है। भारतेन्दु हरिचन्द्र ने इसका सरस पदावली में ब्रजभाषा e vuokn fd;k gA

if.Mr txUukFk& lLdr lkfgR; e if.Mjkt d jpfprk d :l e g ij mUgku xhfrdk0; 80 b0 d yxHkx ekuk tkrk gA ,d tuJfr d vulkj mUgku ;ou ;orh l fookg fd;k FkkA

mud jp vud x/kk e xxkygjh l/kkygjh verygjh d:.kkygjh vkfn Lrfrdk0; gA Hkkfeuh foykl if.Mrjkt txUukFk d eDrd xhrkRed ink dk सुन्दर संग्रह है। प्रांजल पदशय्या अभिनव जलधारा तथा सुललित छन्दोयाधुर्य आदि गू.k bld xhfrdk0; dk egRoi.k cuku oky g ;Fkk ^rhj r:.;k onu lkgl uhj ljkt च मिलद्विकासम् आलोक्य धावत्यु भयत्र मुग्धा मरन्दलुब्धालिकिशोरमाला।।

if.Mrjkt txUukFk dh vU;kfDr vuBh ,o 0;X;i.k gA

सुभाषित संग्रह– संस्कृत का महत्व है। हाल की गाथा– सप्तशती प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है। कुछ सूक्ति संग्रह भी उत्तम है जैसे – कवीन्द्ररस, समुच्चय, सुभाषित पदावली सूक्ति मुक्तावली शार्डधर पद्धति, सुभाषितपदावली आदि संस्कृत का गीतिकाव्य वाड्मय का je.kh; ,o egRoi.k vd gA ble ykfdd ,o Jxkj xhfr& dk0; e lkUn; ,o foykl dk ekfed fp=.k gA lLdr d xhfr dk0;dkjh u eu dh dkey lkUn;

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वृत्तियों को विशेष महत्व दिया है। अतः इनकी श्रृंगार–भावना परिष्कृत है। उसमें माधुर्य का प्रार्चुय है। संस्कुत गीतिकाव्य की अन्तिम महत्वपूर्ण विशेषता उसमें प्रकृति के मनोहारी nश्यों का नितान्त रमणीय अंकन है और उसे मानवीय भावों से सम्बद्ध दिखाकर तो कवियों u deky gh dj fn;k gA

डॉ0 सविता शर्मा

lUnHk lph&

1- dkfynkldr e?knre ,o _rlgkj

2- हाल की गााथा सप्तशती

3- भर्तृहरि का श्रृंगार शतक एवं नीतिशतक

4- अमरूक का अमरूकशतक

5- foYg.k foØekdnopfjr

6- ?kVdij dk ?kVdij

7- gfjfot ; dk jRukdj